ऍन फ्रैंक

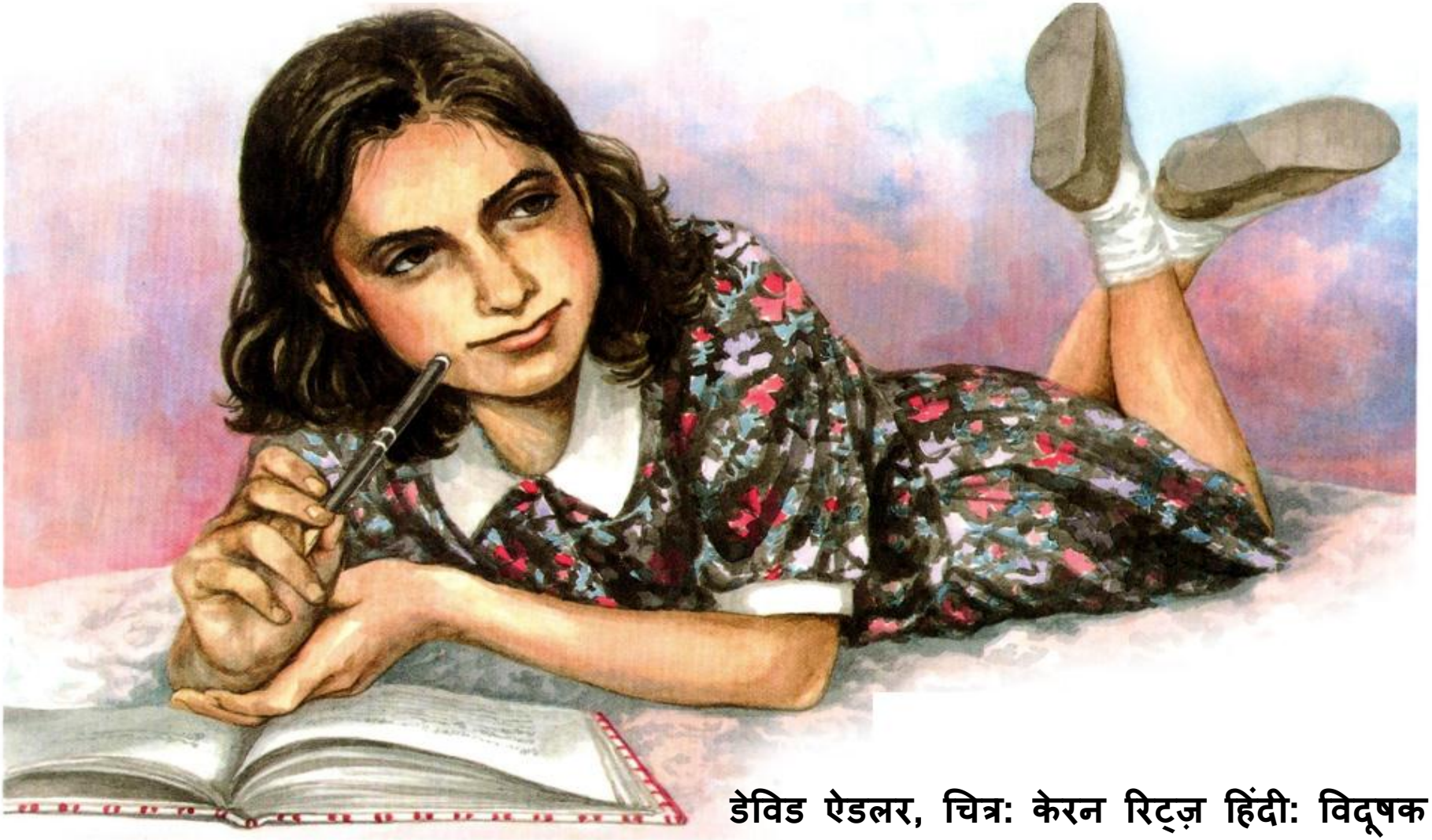

डेविड ऐडलर, चित्र: केरन रिट्ज़ हिंदी: विदूषक

ऍन फ्रैंक

डेविड ऐडलर, चित्र: केरन रिट्ज़ हिंदी: विदूषक

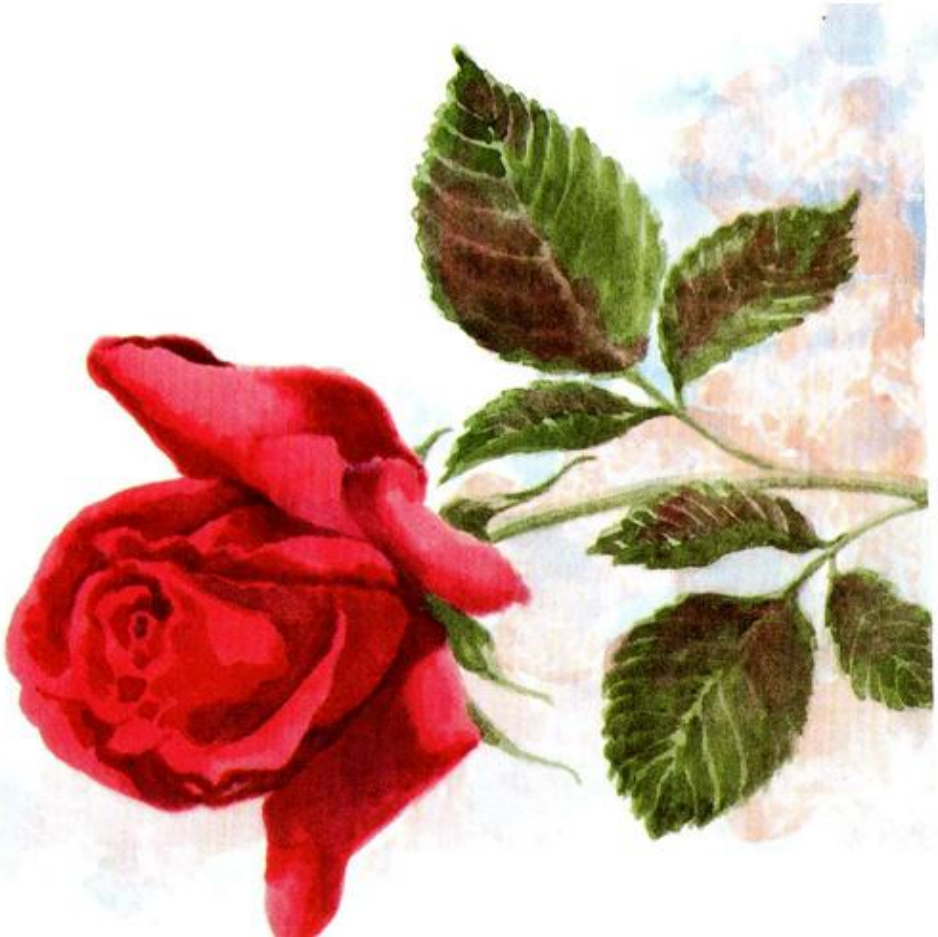

ऍन फ्रैंक का जन्म 12 जून 1929 को फ़्रंकफ़र्ट, जर्मनी में हुआ. एडिथ और ओटो फ्रैंक उसके माता-पिता थे. ऍन की एक बड़ी बहन थी – मर्गोट.

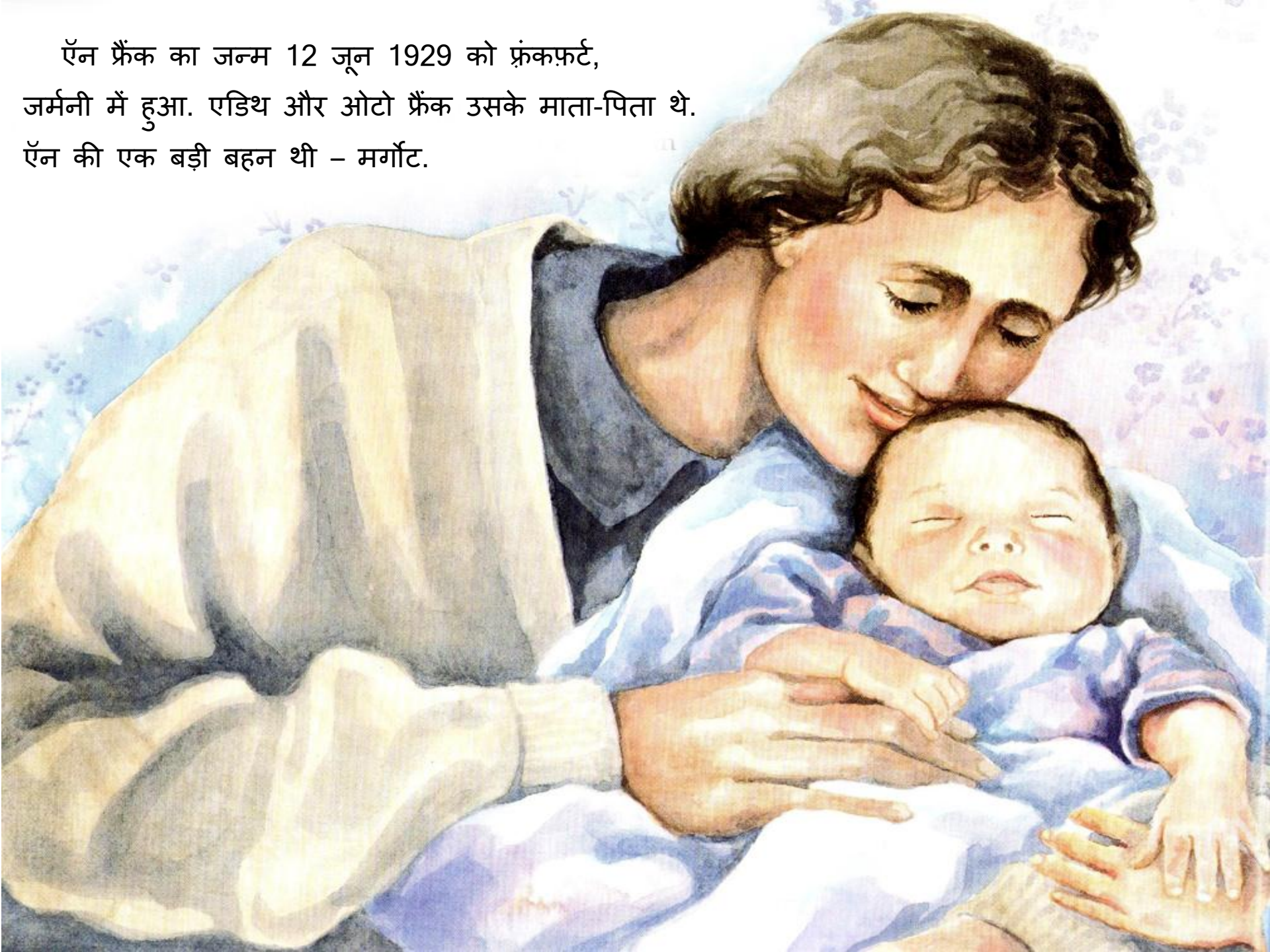

ऍन के पिता एक व्यापारी थे. पहले महायुद्ध में वो जर्मन सेना में एक अफसर रह चुके थे. उनका परिवार सैकड़ों बरसों से फ़्रंकफ़र्ट में रह रहा था.

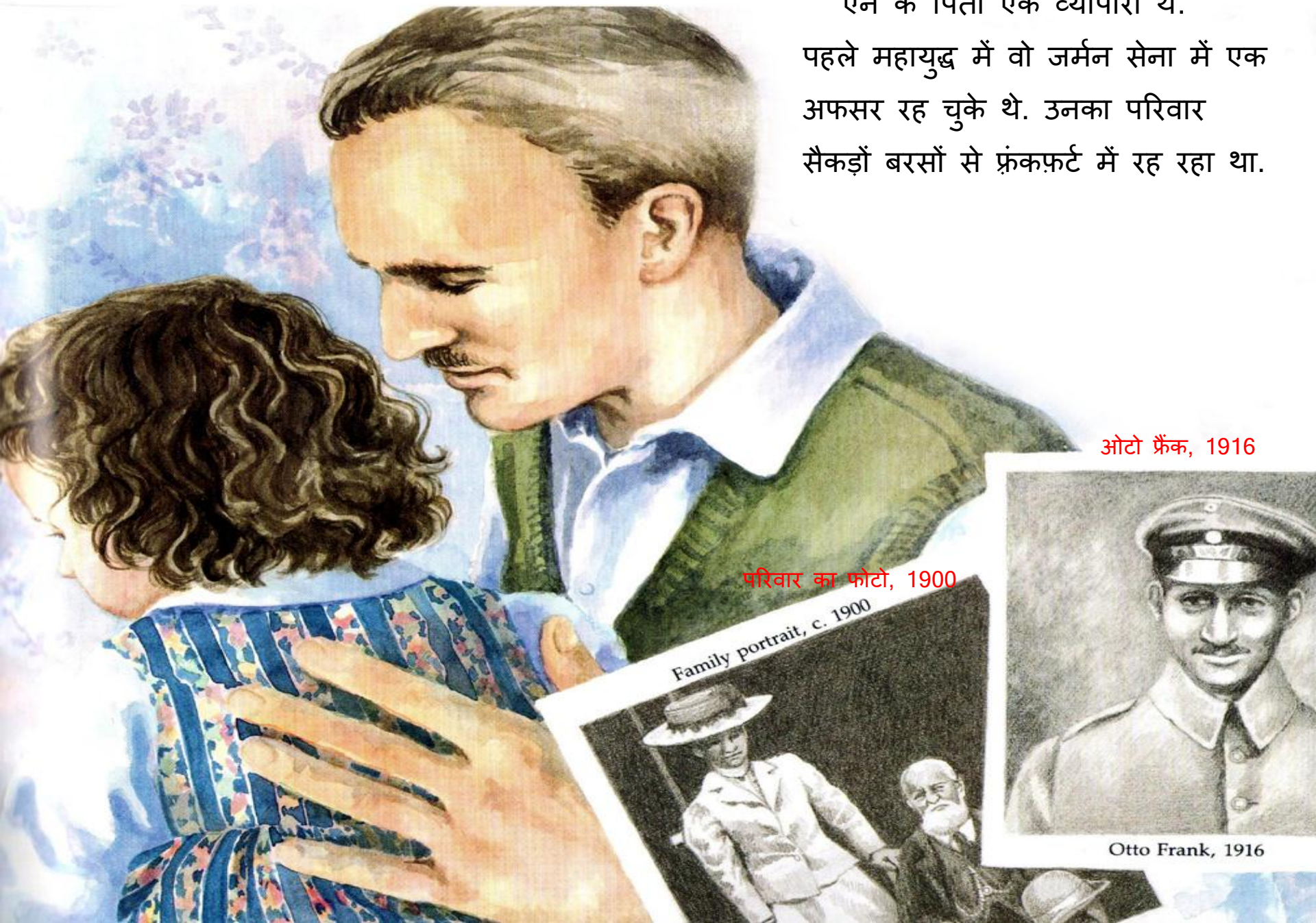

ऍन का जन्म एक बहुत मुश्किल काल में हुआ. उस समय लाखों जर्मन बेरोजगार थे. उन परेशान लोगों ने नाज़ी पार्टी के नेता - अडोल्फ़ हिटलर के घृणा से भरे भाषणों को सुना. हिटलर ने जर्मनी की समस्याओं के लिए एक समूह – यहूदियों को दोषी ठहराया.

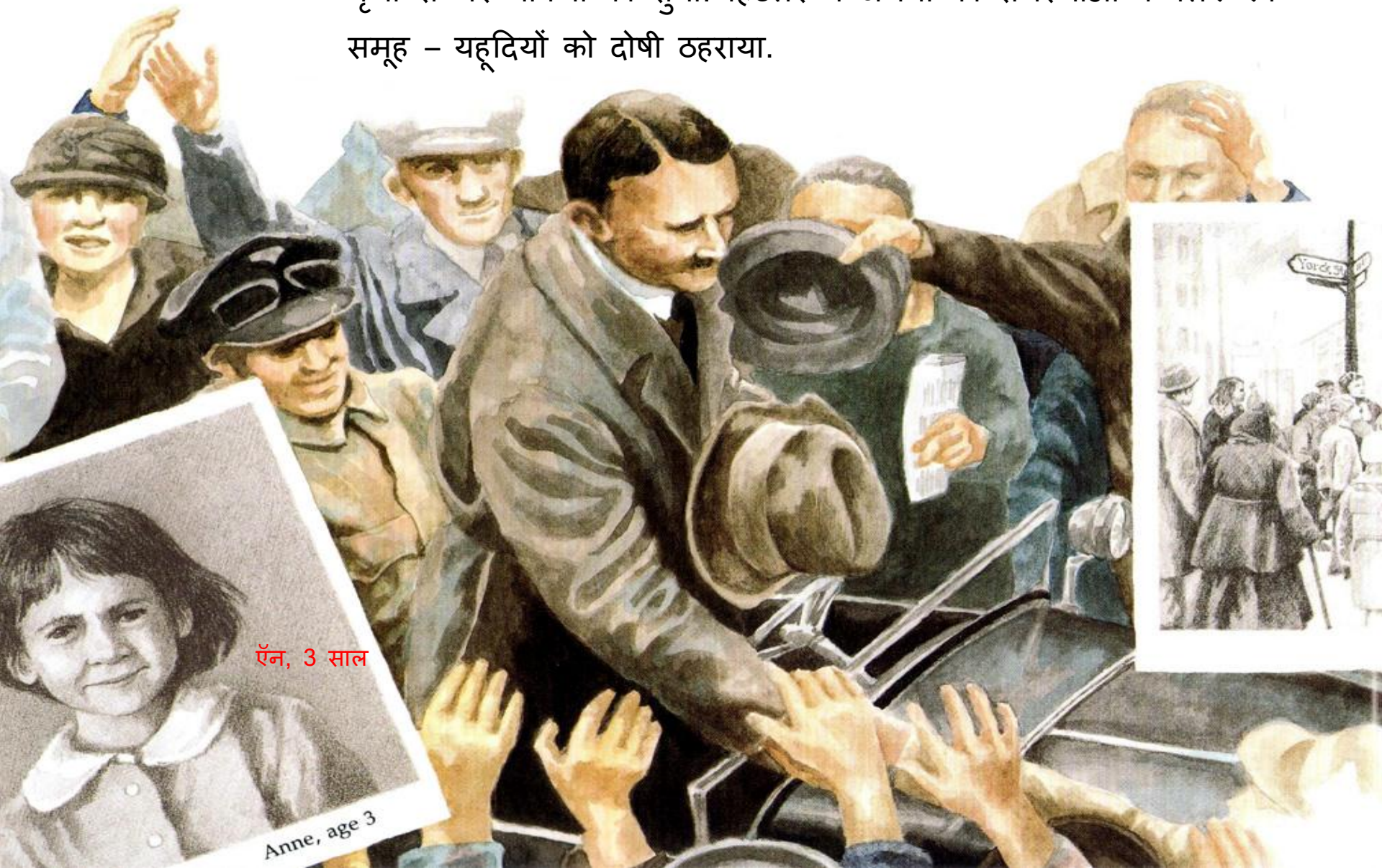

जनवरी 1933 में, इलेक्शन के बाद अडोल्फ़ हिटलर जर्मनी का चांसलर बना. उसके बाद बहुत से यहूदियों ने अपनी नौकरियां खोईं. यहूदियों की दुकानों का बहिष्कार किया गया. यहूदियों द्वारा लिखी किताबों को खुलेआम जलाया गया.

फ्रैंक परिवार क्योंकि यहूदी था इसलिए उसे अपना वतन और देश छोड़ना पड़ा. जर्मनी से वे एम्स्टर्डम, हॉलैंड चले गए. वहां उन्हें लगा वो सुरक्षित रहेंगे.

एम्स्टर्डम में पहले कुछ साल तो ऍन के लिए शांतिपूर्ण रहे. वहां मोंटेसरी स्कूल में उसकी कक्षा के बच्चों से नाटक लिखने को कहा गया. ऍन का दिमाग कहानियों से भरा रहता था. नाटक में ऍन को सबसे अच्छा रोल दिया गया क्योंकि उसका अभिनय बहुत जीवान्त और उम्दा था. बड़े होकर ऍन, एक लेखक या फिल्म स्टार बनना चाहती थी.

Anne and her friend, Sanne

ऍन अपनी मित्र सन्ने के साथ

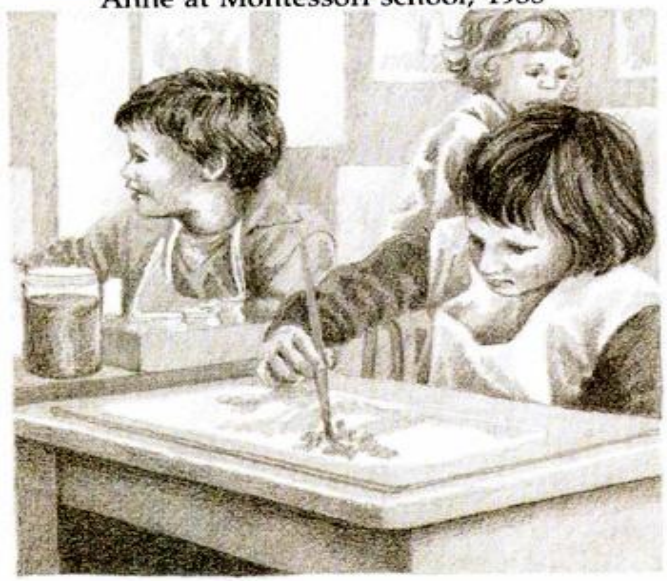

ऍन मोंटेसरी स्कूल में, 1935

Anne at Montessori school, 1935

Anne on her tenth birthday

दसवें जन्मदिन पर ऍन

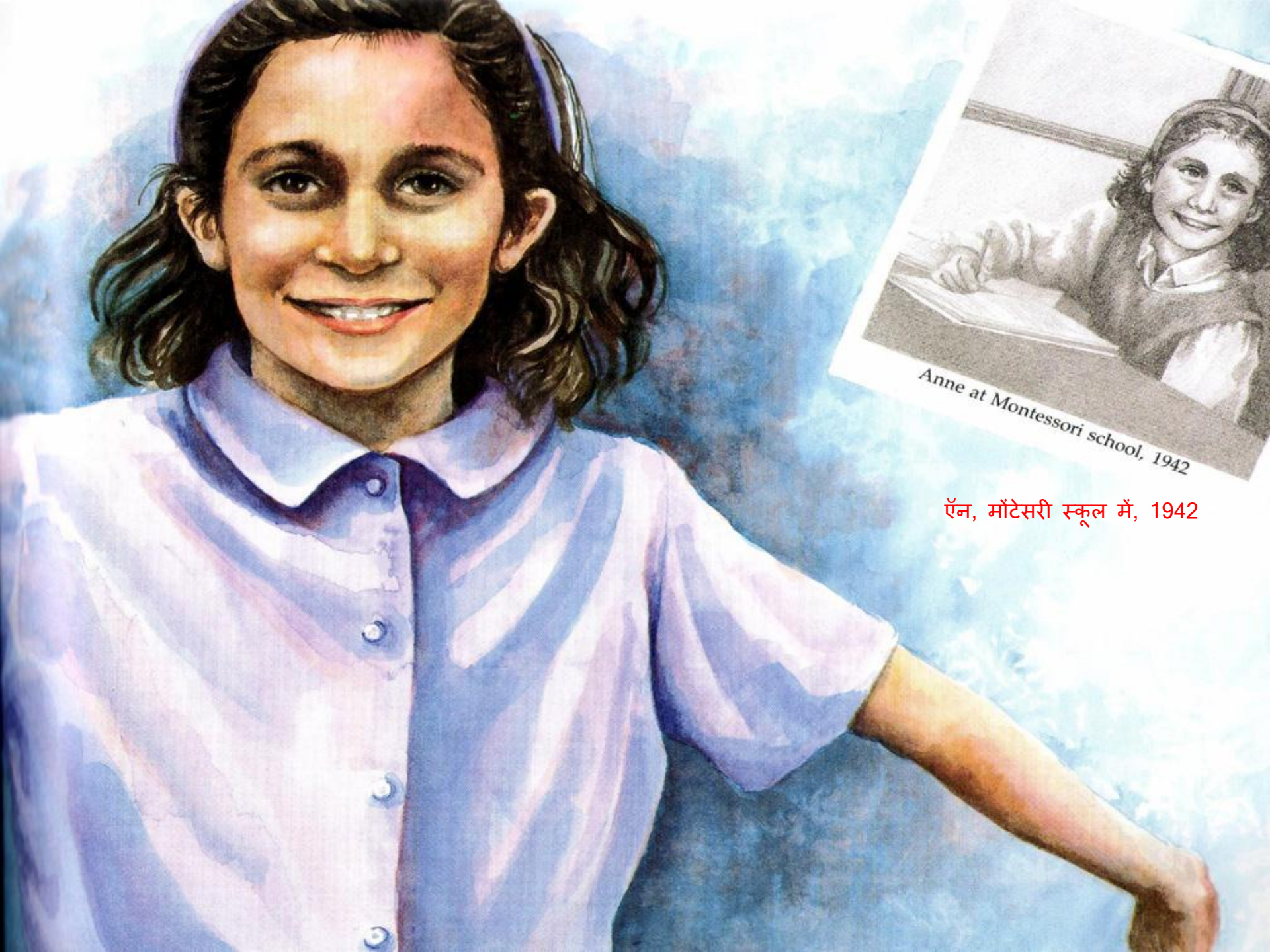

ऍन, मोंटेसरी स्कूल में, 1942

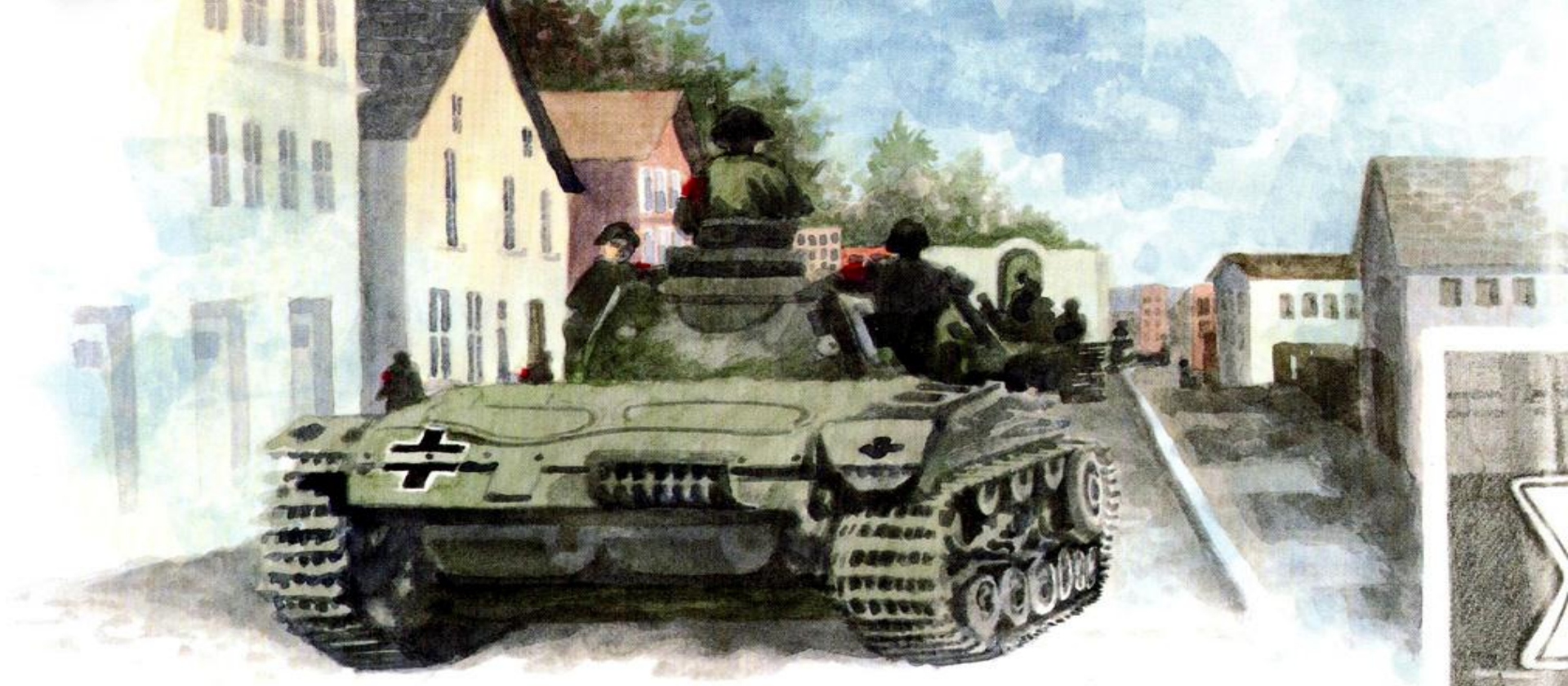

पर जिस घृणा से बचने के लिए फ्रैंक परिवार जर्मनी छोड़कर आया था, उसने उनका यहाँ भी पीछा किया. 1939 में, दूसरा महायुद्ध शुरू हुआ. जर्मन सेना ने एक-के-बाद-एक देश को हराया. मई 1940 में, जर्मनी ने हॉलैंड पर आक्रमण किया.

अब फ्रैंक परिवार के लिए पलायन का कोई रास्ता नहीं बचा था. सभी सीमाओं और ट्रेन स्टेशनों पर जर्मन सैनिक तैनात थे. अगर कोई यहूदी पलायन करता भी, तो वो कहाँ छिपता? उसे छिपने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता. एक-एक करके सभी देशों ने यहूदी शरणार्थियों को लेने से मना किया.

एम्स्टर्डम में यहूदियों को अपनी पहचान बताने के लिए कपड़ों पर “पीला सितारा” पहनना पड़ा. यहूदी अब सिनेमाघरों, पार्कस, बसों, ट्रेन्स और साइकिलों का उपयोग नहीं कर सकते थे. डच स्कूलों में यहूदी बच्चों को दाखिला मिलना बंद हुआ. इसलिए ऍन को मोंटेसरी स्कूल से निकालकर, यहूदी सेकेंडरी स्कूल में डाला गया.

मिस्टर और मिसेज वैन डान का कमरा

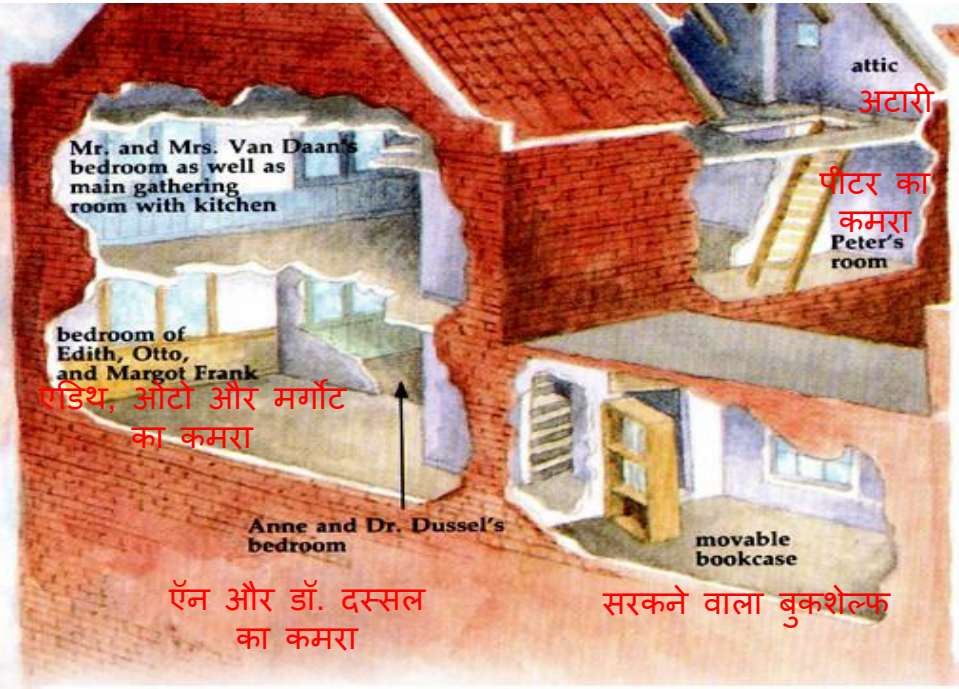

Anne's thirteenth birthday

ऍन का तेरहवां जन्मदिन

Anne

जून 1942 में ऍन ने अपना तेरहवां जन्मदिन मनाया. उस मौके पर उसे कई उपहार मिले जिसमें एक खाली पन्नों वाली कॉपी भी थी. ऍन ने उसे अपनी डायरी बनाया और उसे "किटी" नाम दिया.

5 जून 1942 को, ऍन की बड़े बहन मर्गोट को, लेबर-कैंप में रिपोर्ट करने का आदेश मिला. मर्गोट को वहां एक फैक्ट्री में काम करना था.

वहां और भी कैंप थे, जहाँ यहूदियों को भेजा जाता था. उन कैम्प्स में यहूदियों को यातनाएं दी जाती थीं और अंत में उन्हें मौत के घाट उतारा जाता था. यहूदियों को अक्सर एक कैंप से दूसरे कैंप में ले जाया जाता था. फ्रैंक परिवार को यह अच्छी तरह पता था कि अगर उन्होंने नाज़ियों के आदेश का पालन किया तो वो शायद मर्गोट को फिर कभी नहीं देख पाएं.

नाज़ियों की गिरफ्त से बचने के लिए फ्रैंक परिवार ने छिपने की सोची. ओटो फ्रैंक ने अपने घर में छिपने के लिए एक गुप्त घर बनाया था. छिपने के स्थान का रास्ता सबसे ऊपर की मंजिल की अटारी में से था.

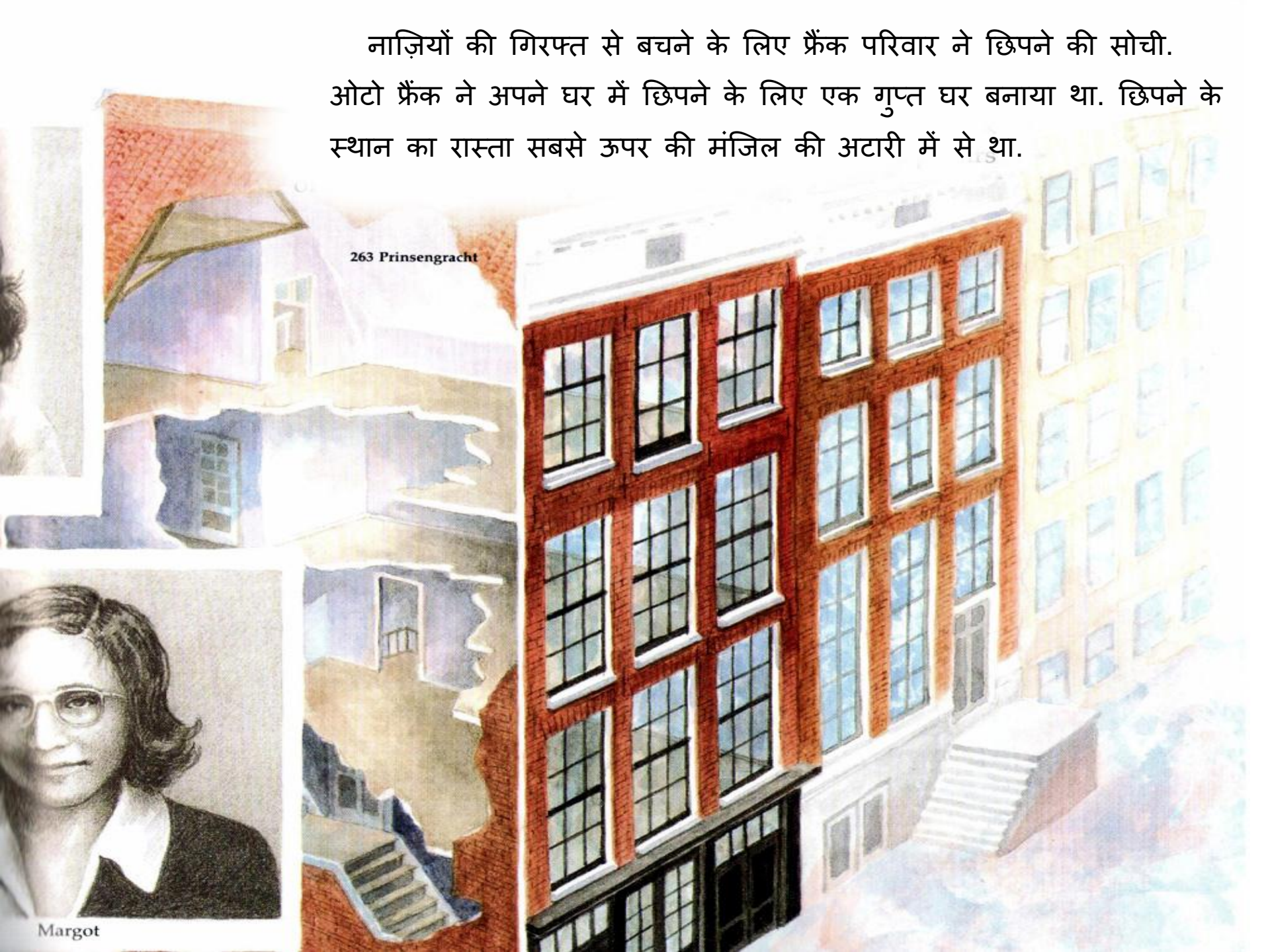

ऍन और उसके परिवार को तहखाने में अपने कपड़े लेकर जाने थे. पर वो नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें सूटकेस ले जाते हुए देखे. क्यों? उससे साफ ज़ाहिर होता कि वे पलायन की कोशिश कर रहे थे. इसलिए सोमवार की सुबह को ऍन ने दो ब्लाउज, तीन पैन्ट्स, एक स्कर्ट और एक जैकेट अपने शरीर पर पहने. ऍन ने अपनी डायरी में लिखा, "हमने कपड़ों की इतनी तहें पहनीं जैसे कि हम उत्तरी-ध्रुव की यात्रा पर जा रहे हों."

मर्गोट, ऍन, एडिथ और ओटो
Margot, Anne, Edith, and Otto Frank

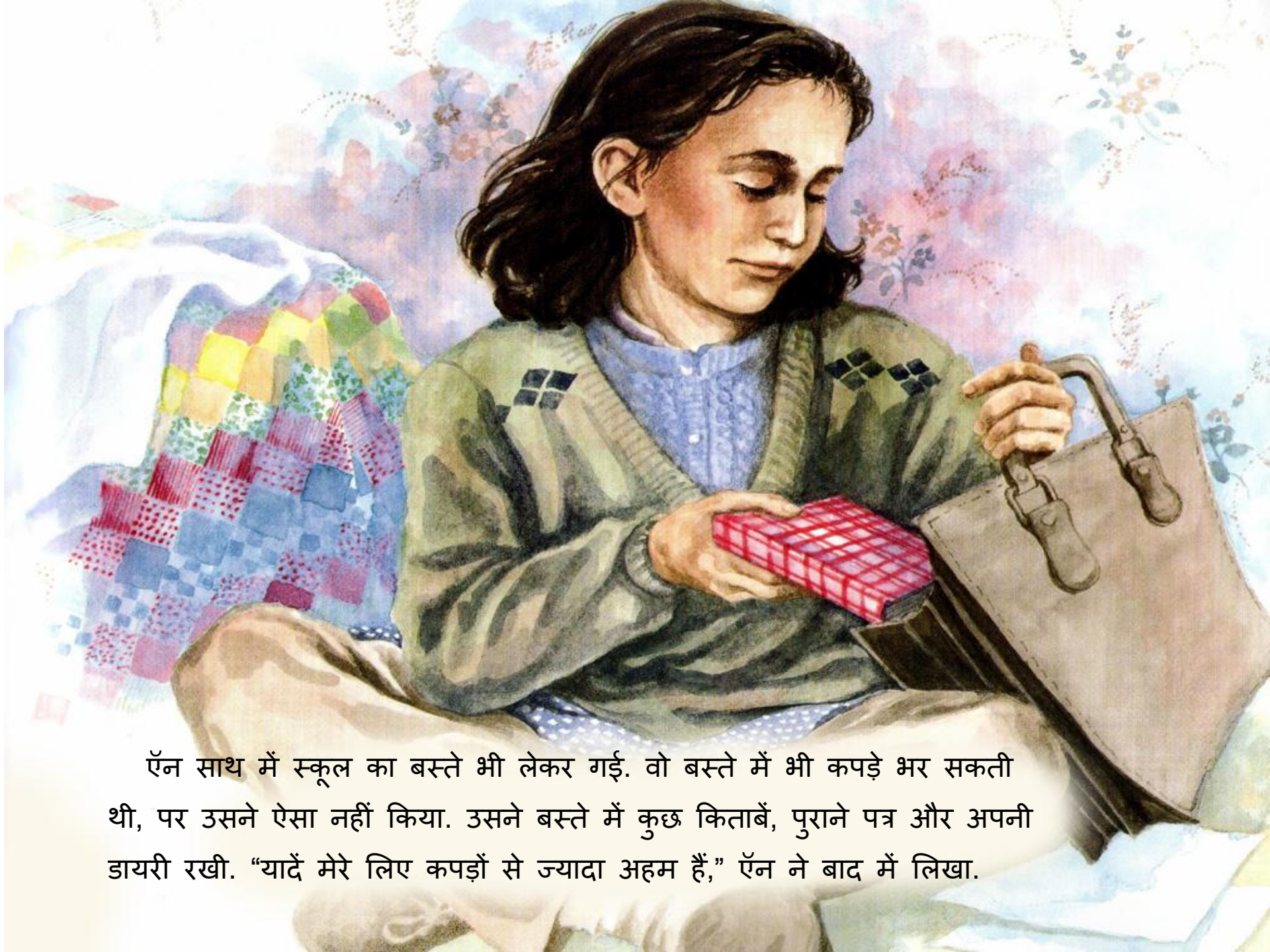

ऍन साथ में स्कूल का बस्ते भी लेकर गई. वो बस्ते में भी कपड़े भर सकती थी, पर उसने ऐसा नहीं किया. उसने बस्ते में कुछ किताबें, पुराने पत्र और अपनी डायरी रखी. “यादें मेरे लिए कपड़ों से ज्यादा अहम हैं,” ऍन ने बाद में लिखा.

Edith Frank एडिथ फ्रैंक
Peter Van Daan पीटर वैन डैन
Anne Frank
ऍन फ्रैंक
Otto Frank
ओटो फ्रैंक

गुप्त घर में चार कमरे थे, एक बाथरूम, एक अटारी थी. इस गुप्त घर में फ्रैंक परिवार के साथ उनके चार अन्य मित्र भी थे जो नाज़ियों से बचना चाहते थे – मिस्टर और मिसेज़ वैन डैन, उनका बेटा पीटर, और एक डेंटिस्ट डॉ. अल्बर्ट दस्सल

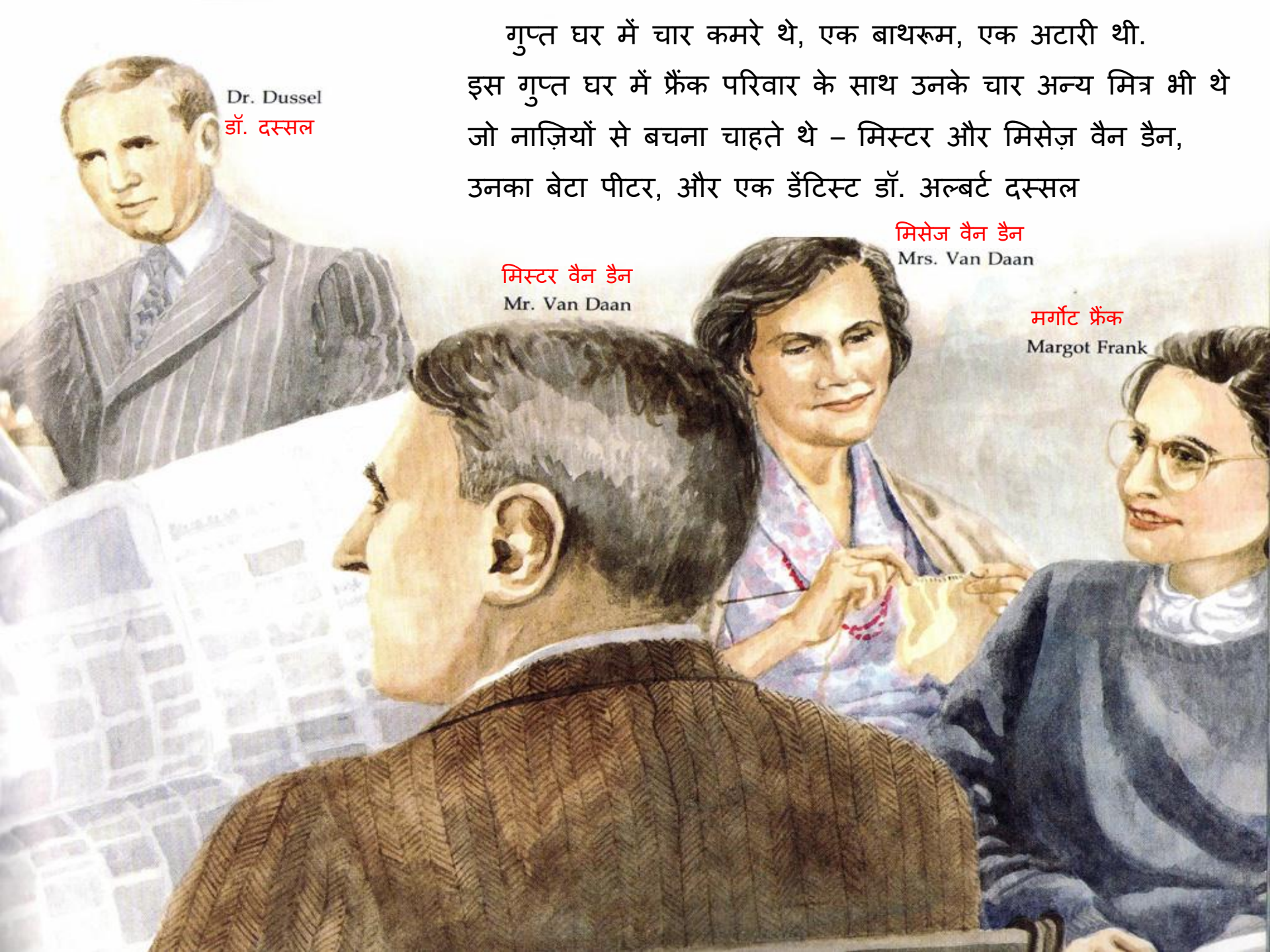

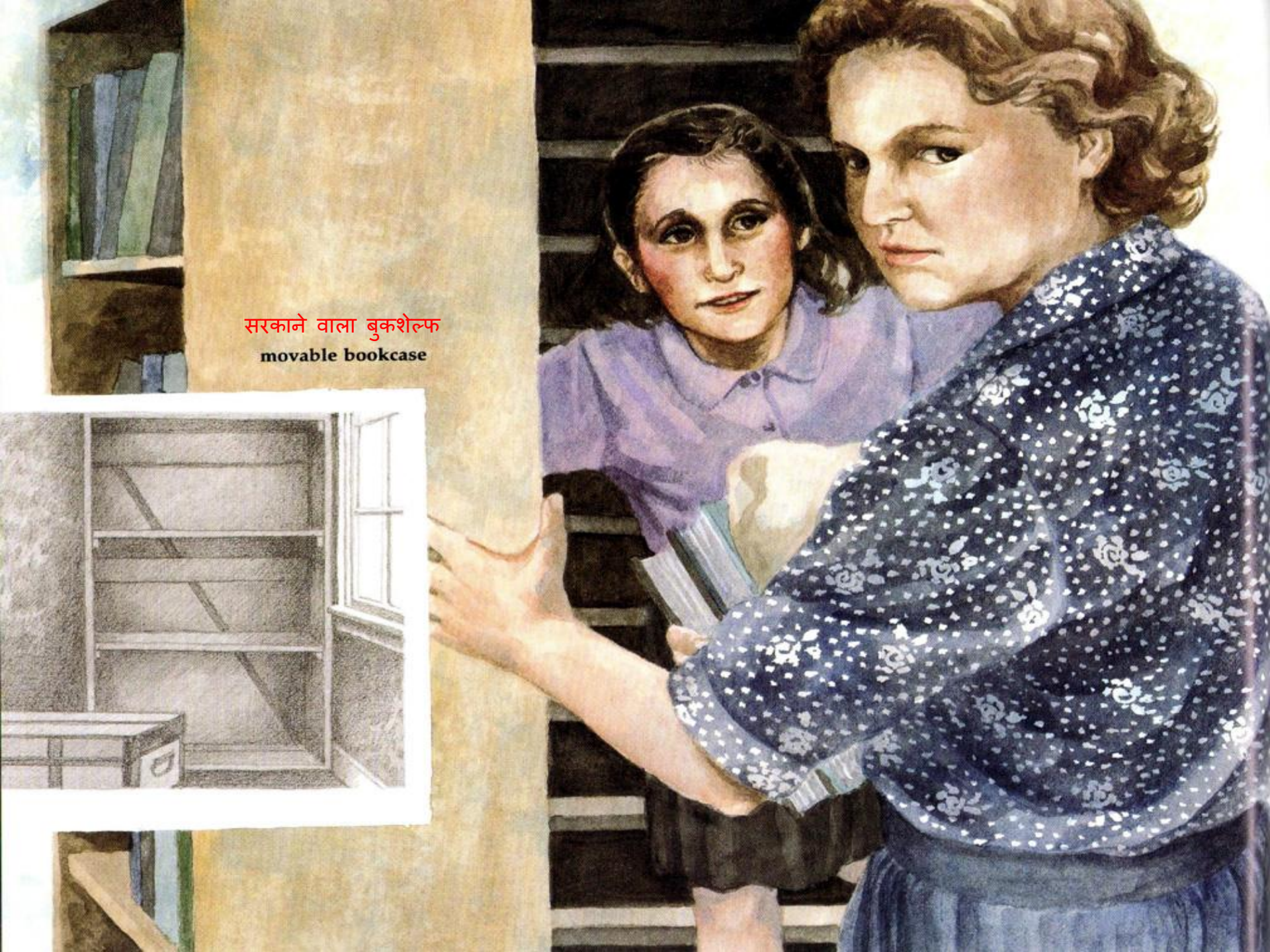
सरकाने वाला बुकशेल्फ
movable bookcase

गुप्त घर को छिपाने के लिए बड़ी होशियारी से एक सरकाने वाला बुकशेल्फ बनवाया गया था. बुकशेल्फ से, गुप्त घर में जाने वाली सीढ़ियां छिप जाती थीं. जब कोई भी नहीं देख रहा होता, उस समय फ्रैंक परिवार के मित्र चुपके से उनके लिए खाना, पत्रिकाएं और अन्य चीज़ें लाते. इससे यह साहसी डच लोग, अपनी ज़िन्दगी को खतरे में डाल रहे थे. अगर नाज़ियों को उसकी कुछ भी भनक लगती तो यहूदियों की मदद करने के इलज़ाम में उन डच लोगों को भी, कंसंट्रेशन कैम्प्स में भेज दिया जाता.

दिन भर जब नीचे के ऑफिस और गोदाम में लोग काम कर रहे होते, उस समय ऍन और अन्य लोगों को विशेष रूप से शांत रहना होता. वो केवल एक-दूसरे से फुसफुसा सकते थे.

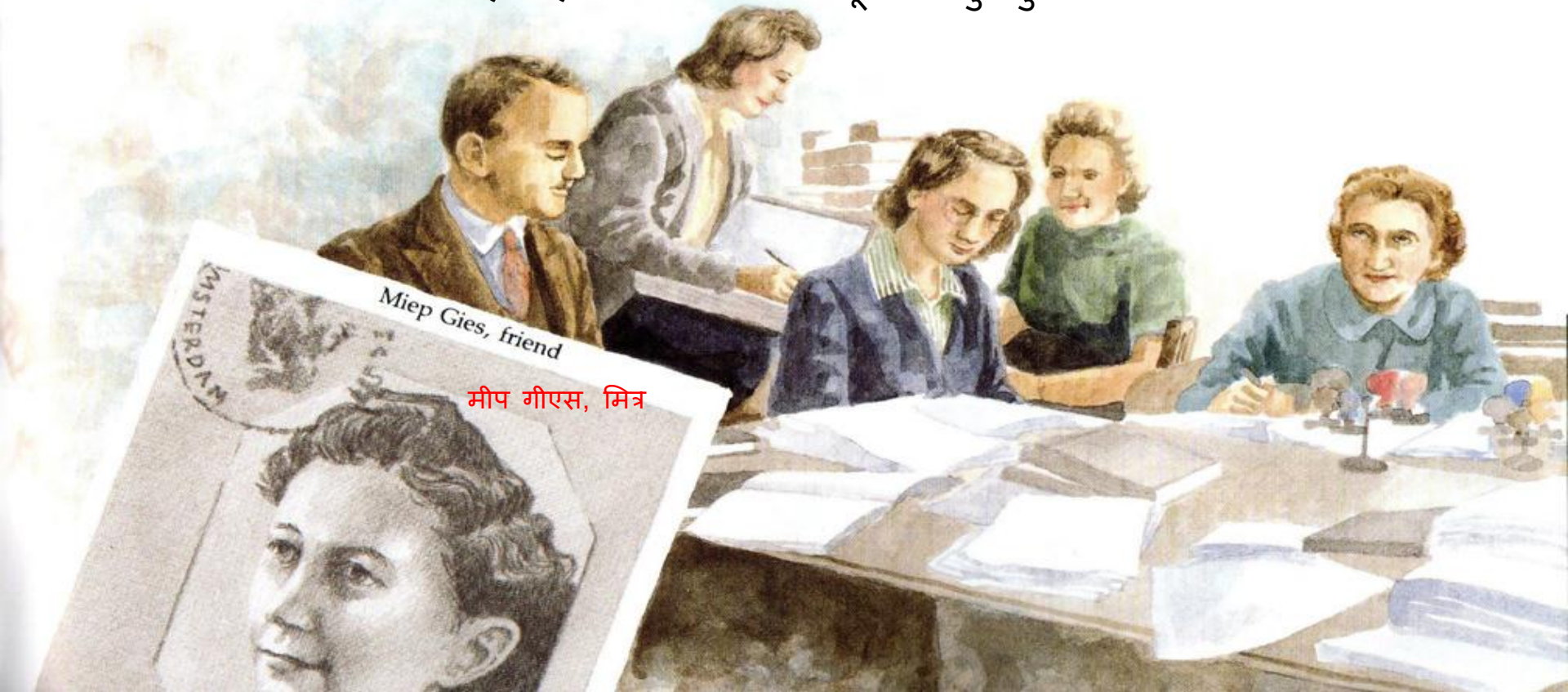

ऍन ने अपने छोटे कमरे की दीवारों पर फ़िल्मी सितारों की तस्वीरें चिपकायीं. शुरू में वो वहां काफी खुश थी. उसने अपनी डायरी में लिखा कि, “छिपना, किसी बोर्डिंग हाउस में छुट्टी मनाने जैसा था.”

पर जल्द ही ऍन उससे ऊब गई. वहां रोजाना लगभग एक जैसा ही खाना मिलता था. आठ महीनों के बाद ऍन ने लिखा, “मैंने इन महीनों में इतना राजमा / लोबिया खाया है, कि अब उसे देखते ही मुझे उल्टी आती है.” घर में भी उसे हमेशा वही चेहरे दिखते थे. वे लोग आपस में अक्सर झगड़ते और बहस करते थे.

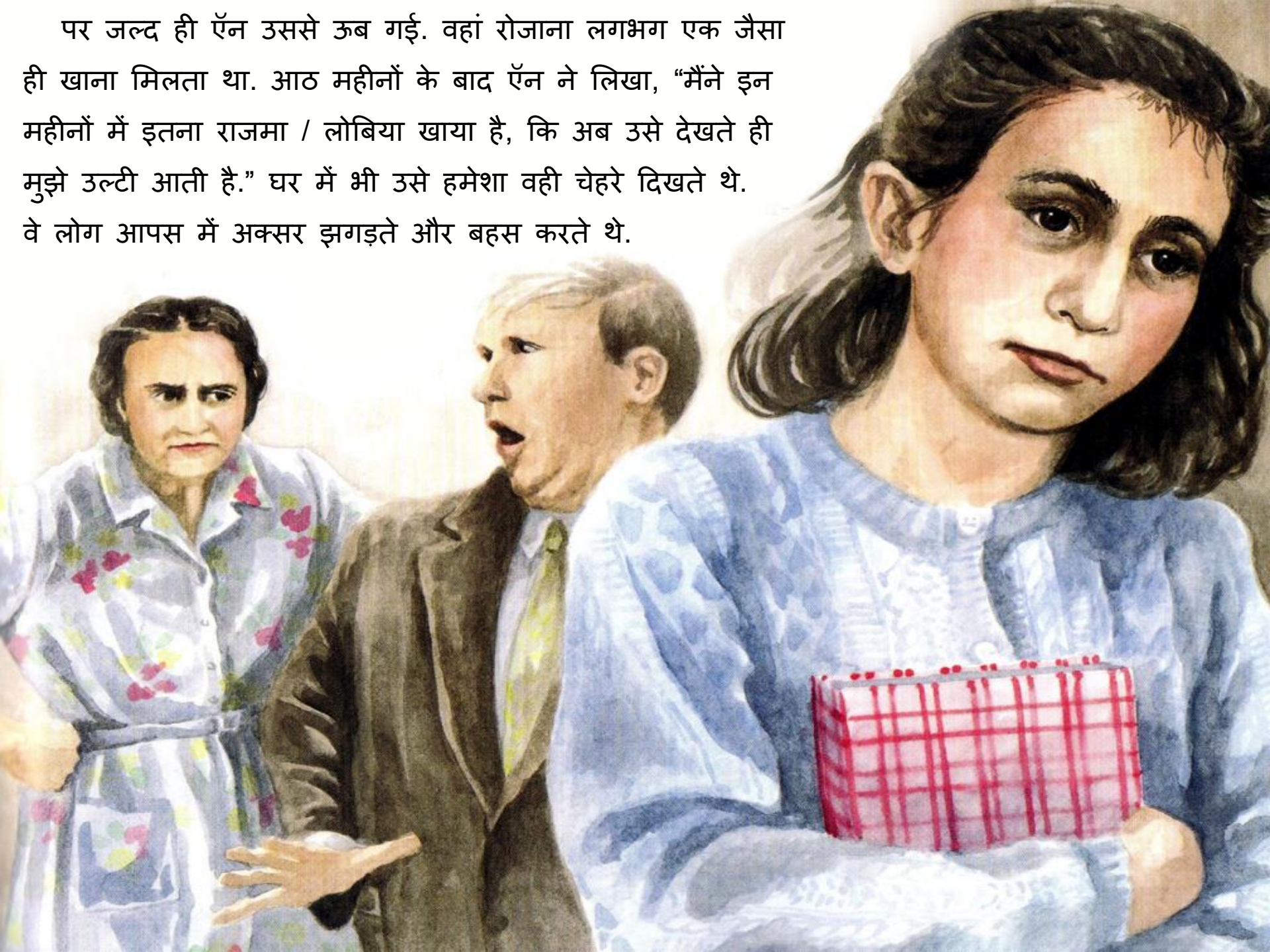

रात में ऍन को बड़े-बड़े चूहों के दौड़ने की आवाज़ सुनाई देती थी. कभी-कभी चोर, नीचे गोदाम में भरा माल चुराते थे. कभी सायरन, बंदूकों और बम्ब फटने की आवाजें आती थीं. अट्ठारह महीने उस गुप्त घर में रहने के बाद ऍन ने कहा, “मुझे अब हर चीज़ की प्रबल इच्छा हो रही है – बातें करने की, आज़ादी की और दोस्तों से मिलने की. यह सब बातें सोचकर ही मुझे रोना आ रहा है!”

पर ऍन को यह भी पता था कि वो बहुत खुशनसीब थी. जब वो गुप्त स्थान में छिपी थी तब कितने अन्य यहूदियों को नाज़ियों ने पकड़ा था.

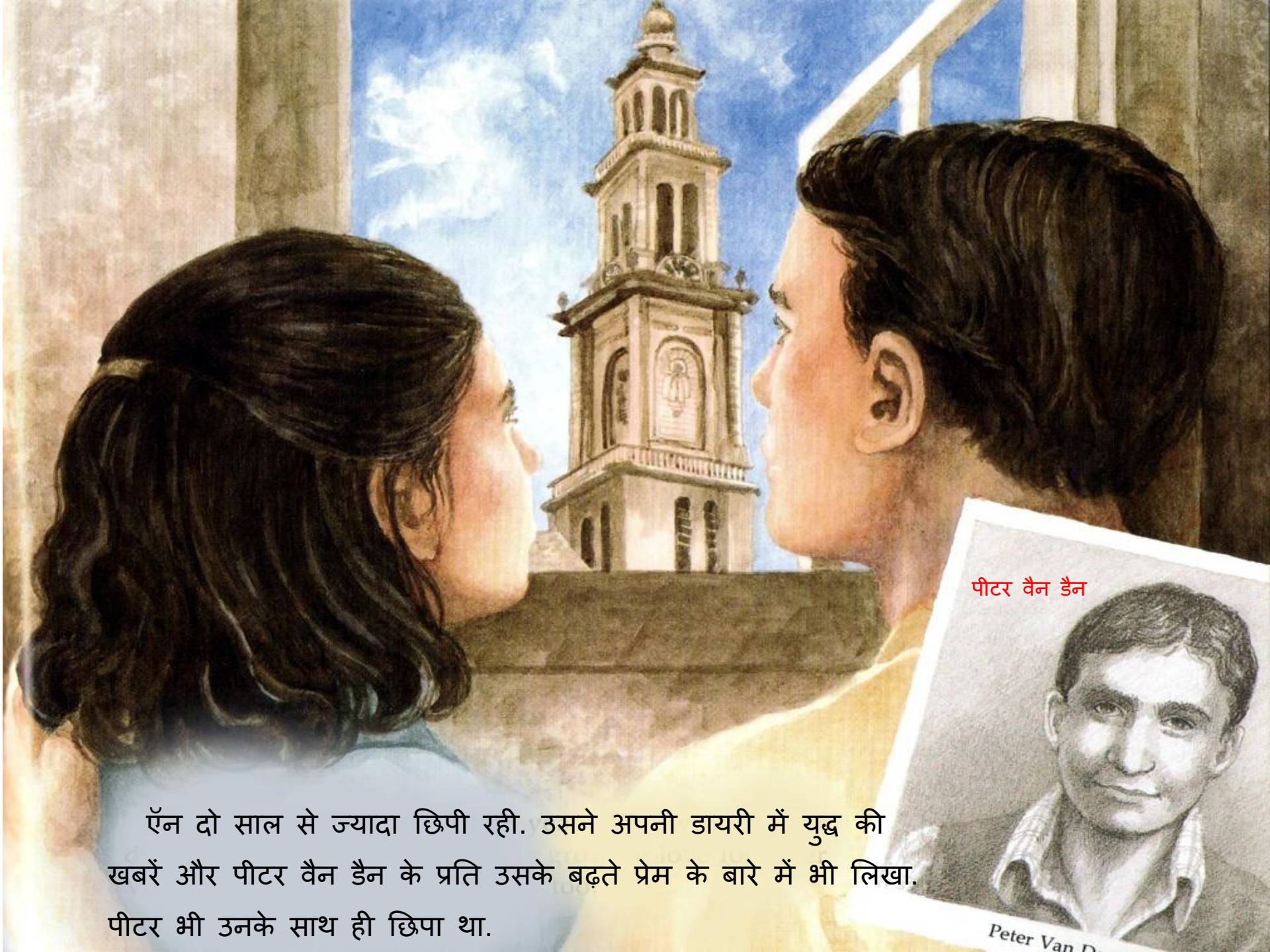

ऍन दो साल से ज्यादा छिपी रही. उसने अपनी डायरी में युद्ध की खबरें और पीटर वैन डैन के प्रति उसके बढ़ते प्रेम के बारे में भी लिखा. पीटर भी उनके साथ ही छिपा था.

1944 के मध्य तक जर्मनी युद्ध में हारने लगा था. ऍन और बाकी लोगों को यह पता था कि अगर वो वहां कुछ दिन और छिपे रहे तो शायद वे बच जाएँ. पर 4 अगस्त 1944 को, उनकी किस्मत ने धोका दिया. नाज़ियों को उनके छिपने के स्थान का पता चला और उन्होंने वहां धावा बोला.

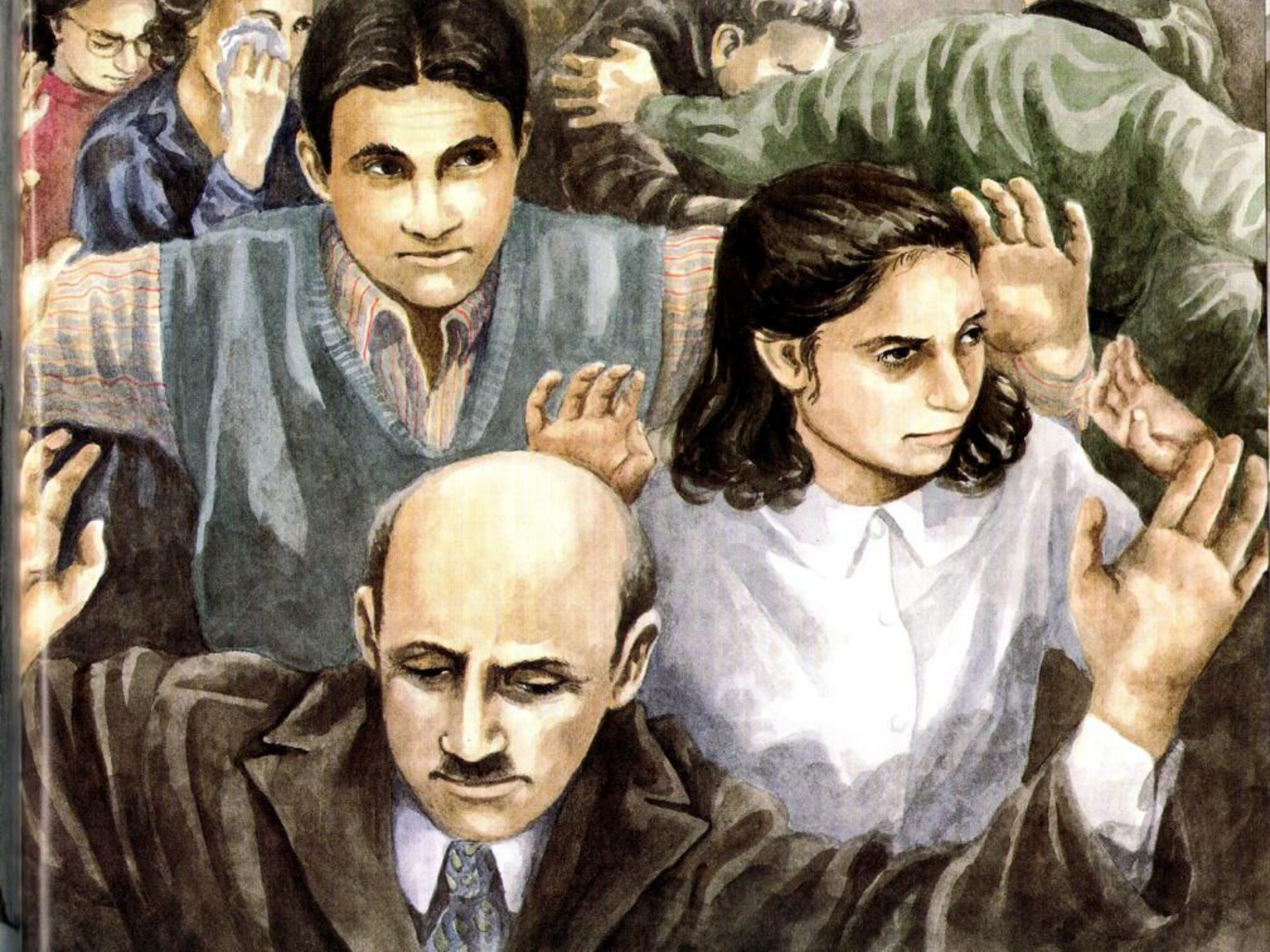

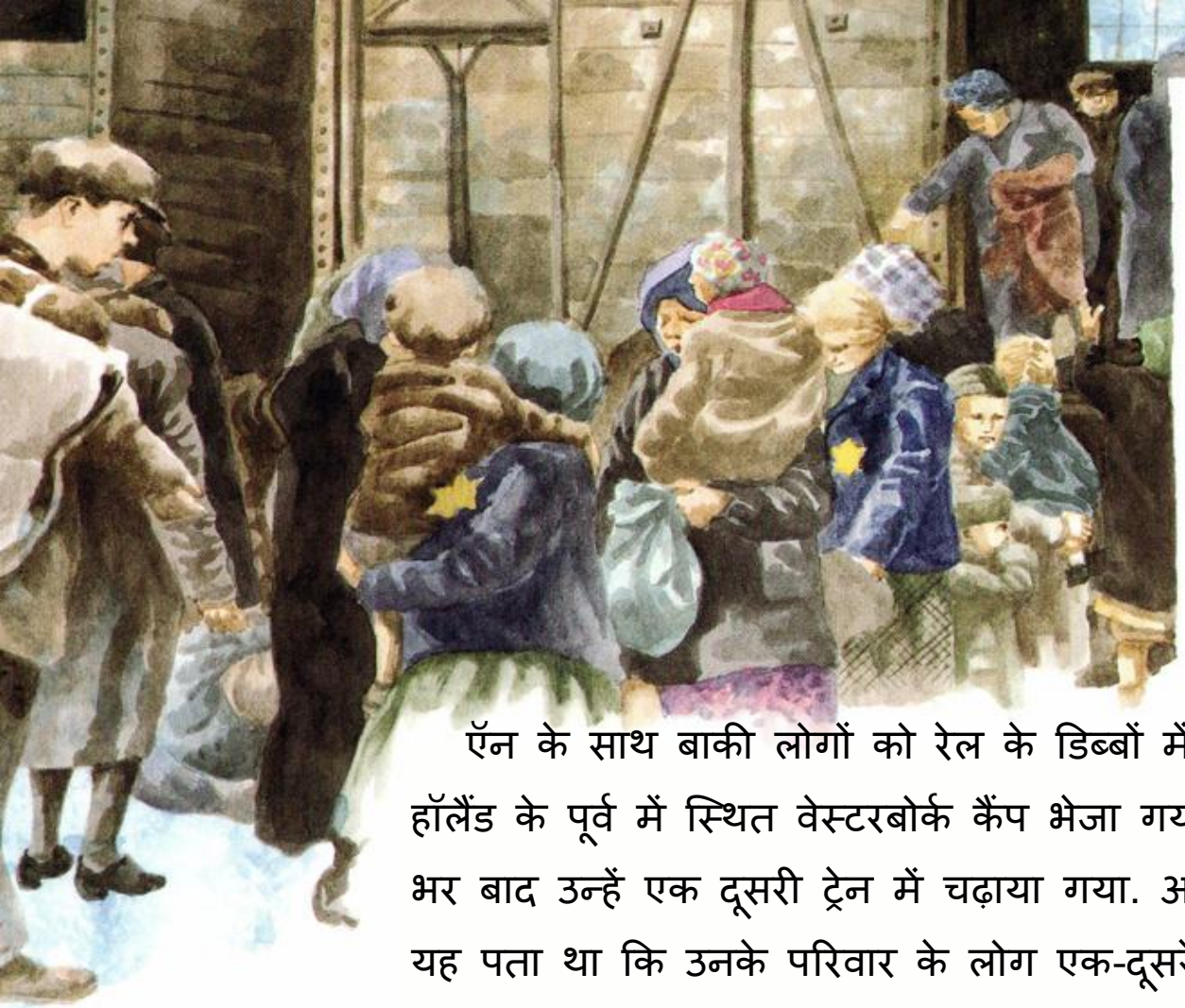

ऍन के साथ बाकी लोगों को रेल के डिब्बों में बंद करके हॉलैंड के पूर्व में स्थित वेस्टरबोर्क कैंप भेजा गया. महीने भर बाद उन्हें एक दूसरी ट्रेन में चढ़ाया गया. ओटो फ्रैंक को यह पता था कि उनके परिवार के लोग एक-दूसरे से अलग हो सकते हैं. इसलिए उन्हें सबको स्विट्ज़रलैंड का एक पता दिया, जहाँ सभी युद्ध ख़त्म होने के बाद मिल सकते थे.

दो दिन और दो रात की यात्रा के बाद ट्रेन के डिब्बे का दरवाज़ा खुला. उन्हें पोलैंड के औशविग मृत्यु-कैंप में लाया गया था. ऍन ने कैंप प्रवेश द्वार पर यह बड़ा साईन-बोर्ड देखा – ***काम से तुम्हें मुक्ति मिलेगी*** (वर्क विल मेक यू फ्री). पर वो सफ़ेद झूठ था.

औशविग पहुँचने के बाद कुछ बंदियों को तुरंत मृत्यु कक्ष में ले जाया गया. ऍन जैसे लोगों को काम करने के लिए जिंदा रखा गया. पर उस चिलचिलाती सर्दी में, भोजन और कपड़ों के अभाव में, मृत्यु निश्चित थी. पर ऍन अभी भी ठीक-ठाक हालत में थी.

अक्टूबर में ऍन और मर्गोट को बरजिन-बेलसन कैंप, जर्मनी ले जाया गया. वहां खाने और पानी घोर अभाव था और बीमारियों की भरमार थी. वहां पर ऍन और मर्गोट दोनों को टाइफाइड हुआ. 1945 की फरवरी-मार्च में, पहले मर्गोट और फिर ऍन का, भूख और बीमारी से देहांत हो गया. मृत्यु के समय ऍन फ्रैंक सिर्फ 15 साल की थी.

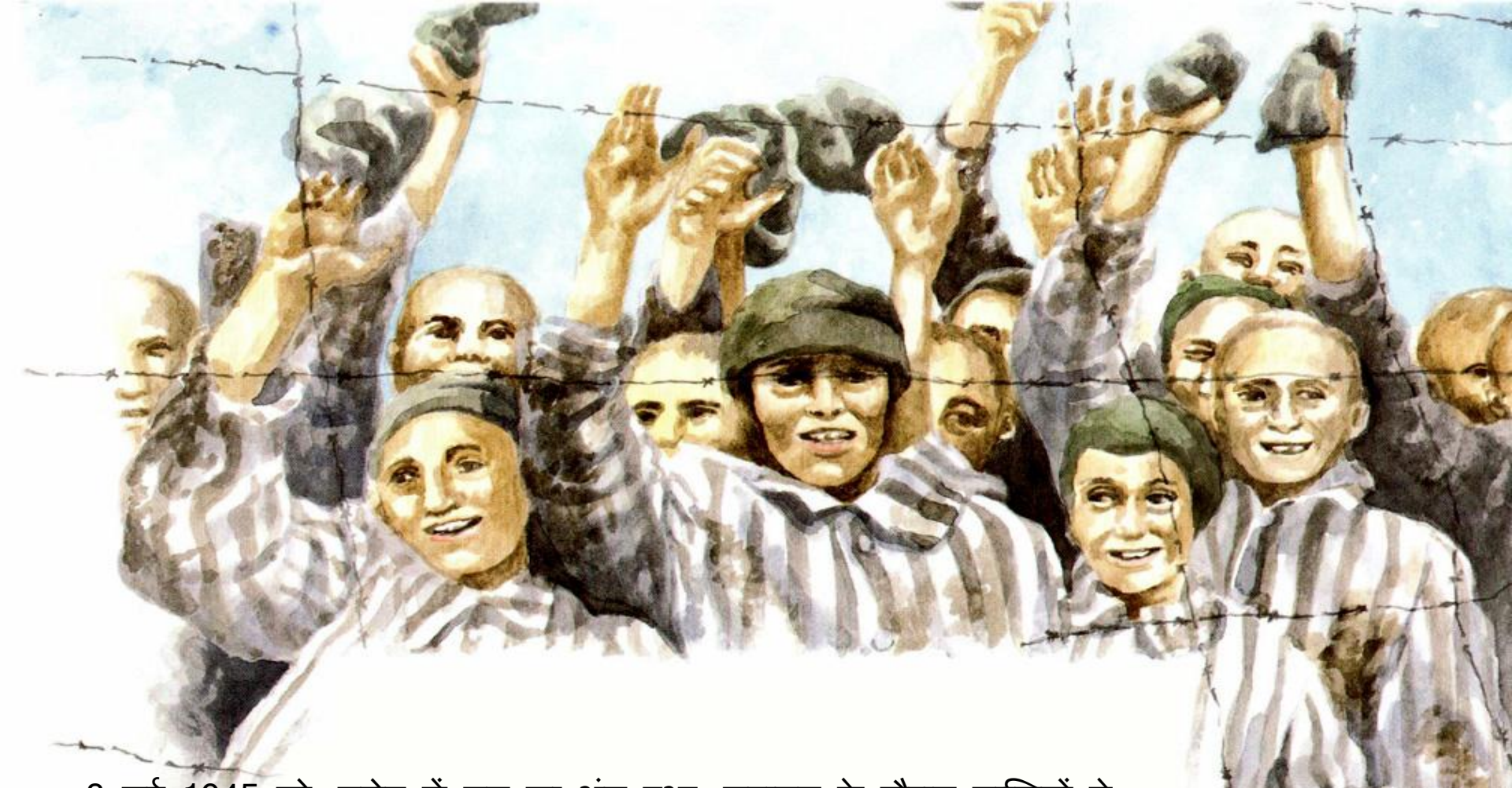

8 मई 1945 को, यूरोप में युद्ध का अंत हुआ. महायुद्ध के दौरान नाज़ियों ने 60-लाख यहूदियों को मौत के घाट उतारा. मरने वालों में 15-लाख बच्चे थे. हॉलैंड में रह रहे एक लाख बीस हज़ार यहूदियों में से केवल चौदह हज़ार यहूदी ही, जिंदा बचे. जो आठ लोग एम्स्टर्डम के घर में छिपे थे उनमें से सिर्फ ओटो फ्रैंक ही बचे. नाज़ियों ने यहूदियों के साथ-साथ बड़े पैमाने पर विकलांगों, मानसिक रोगियों, भिखारियों, रूसी बंदियों, जिप्सियों, समलैंगिक और कम्युनिस्टों का भी कत्लेआम किया.

बाद में ओटो फ्रैंक एम्स्टर्डम लौटे. किसी को ऍन की डायरी पड़ी मिली. उसने उसे ओटो फ्रैंक को सौंपी. ऍन फ्रैंक की डायरी पहली बार 1947 में प्रकाशित हुई. अब उसका पचास से अधिक भाषाओँ में अनुवाद हो चुका है. अब लाखों-करोड़ों लोगों ने ऍन फ्रैंक की डायरी पढ़ी है. उस डायरी को पढ़ने के बाद वो युद्ध की भयावयता और लोगों के दुःख-दर्द और पीड़ा को समझ पाए हैं.

कुछ लोगों के लिए दूसरे महायुद्ध की विभीषिका, और उसमें लाखों साधारण लोगों के कत्लेआम को अभी भी समझना मुश्किल है. इस युद्ध में संगठित तरीके से लाखों निरीह लोगों को मारा गया. पर ऍन फ्रैंक की डायरी पढ़ने के बाद उन्हें यह बातें एकदम स्पष्ट हो जाती हैं. तब वो युद्ध की पीड़ा झेली एक लड़की की निजी ज़िन्दगी को, करीबी से देख पाते हैं और ऍन फ्रैंक के जीवन को विस्तार से समझ पाते है.

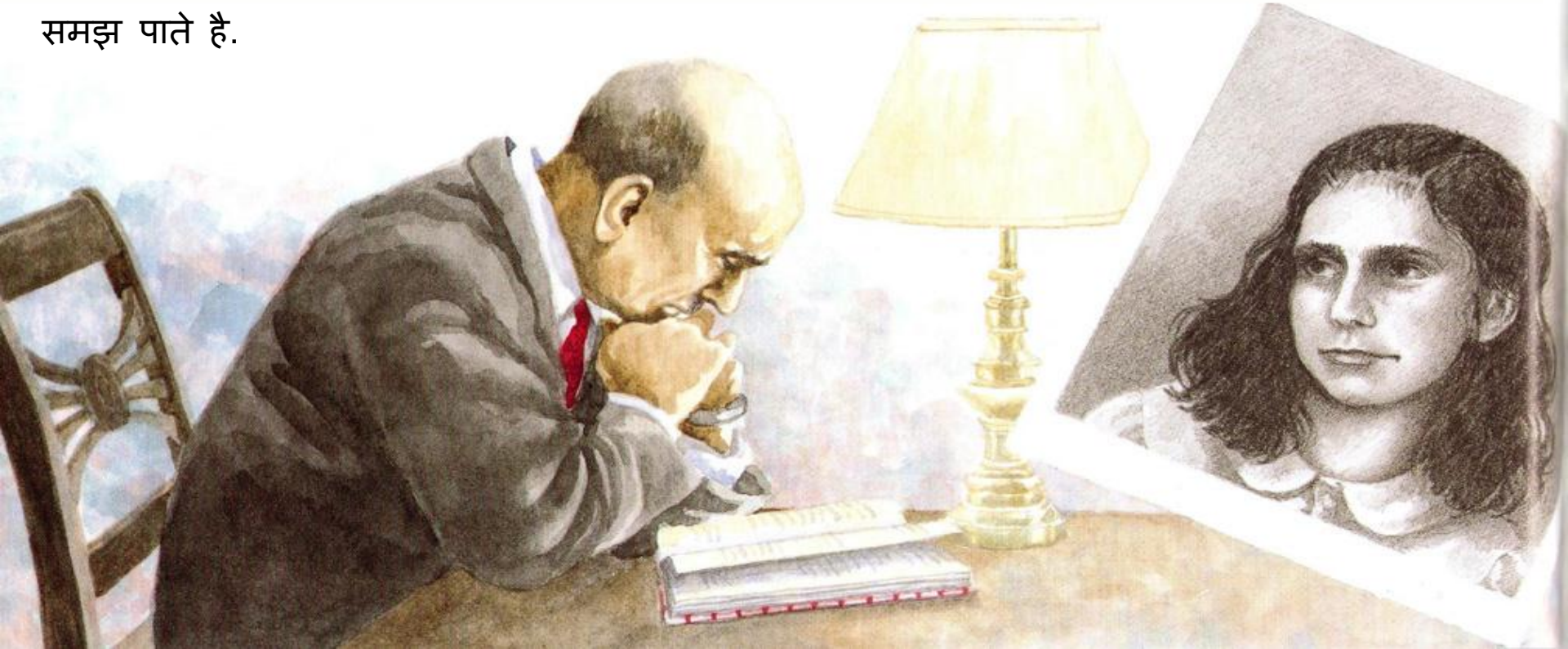

लेखक का नोट

एम्स्टर्डम का "गुप्त घर" अब एक सार्वजानिक म्यूजियम है, जिसमें कोई भी जा सकता है. उस म्यूजियम को *ऍन फ्रैंक फाउंडेशन* संचालित करती है.

"द डायरी ऑफ़ ऍन फ्रैंक" जब किताब के रूप में छपी तो उसकी सामग्री सिर्फ पहली (खाली पन्नों वाली डायरी) में से नहीं ली गई. ऍन ने पहली डायरी जून 14 और दिसम्बर 5, 1942 के बीच लिखी. उसमें उसने कुछ पन्ने, 1943 और 1944 में भी लिखे थे. बाद में ऍन की दूसरी और तीसरी डायरी भी मिली और साथ में कुछ लूस पन्ने भी मिले. *"द डायरी ऑफ़ ऍन फ्रैंक"* में उस सभी सामग्री का समावेश है. ऍन फ्रैंक की डायरी, सबसे पहले डच भाषा में छपी.

ऍन अपनी डायरी के सभी पात्रों के नाम, बदलना चाहती थी.

मेरे लिए यह डायरी इसलिए बहुत मायने रखती है, क्योंकि ऍन की तरह मेरी माँ का जन्म भी फ़्रंकफ़र्ट, जर्मनी में हुआ. मेरी माँ का परिवार, फ़्रंकफ़र्ट में सैकड़ों सालों से रहा था. मेरी माँ भी, अपने माता-पिता, भाइयों और बहनों के साथ नाज़ियों से बचने के लिए फ़्रंकफ़र्ट छोड़कर एम्स्टर्डम, हॉलैंड गईं. भाग्यवश, उन्होंने जर्मनी के आक्रमण से पहले ही, 1939 में, हॉलैंड छोड़ दिया.

डेविड ए. अडलेर

15 जनवरी, 1992

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1929	12 जून को फ़्रंकफ़र्ट में जन्म
1933	परिवार सहित एम्स्टर्डम, हॉलैंड में आकर बसीं
1939	दूसरे महायुद्ध की शुरुआत
1940	10 मई को जर्मनी का हॉलैंड पर आक्रमण
1942	ऍन के तेरहवें जन्मदिन पर उसे खाली पन्नों वाली डायरी भेंट. वही उसकी प्रसिद्ध डायरी बनी.
1944	4 अगस्त को छिपे घर से ऍन और अन्य लोगों की गिरफ्तारी
1944	3 सितम्बर को औशविग मृत्यु कैंप के लिए रवाना
1944	अक्टूबर में ऍन और उसकी बहन मर्गोट को बरजिन-बेलसन कैंप भेजा गया
1945	फरवरी के अंत या मार्च की शुरुआत में ऍन फ्रैंक की बरजिन-बेलसन में मृत्यु
1945	*ऍन फ्रैंक की डायरी* का प्रकाशन